प्राचीन काल में तो पूरब ने पश्चिम को प्रभावित किया है, परंतु आधुनिक काल में पूरब के लोग भी पश्चिम से अधिक प्रभावित होने लगे है। समर्पण हाल है नकल है। इससे पश्चिम को समझा नही जा सकता है। आज सब लोग अंग्रेजी भाषा, वेशभूषा और चाल-चलन आँख मूदकर अपना रहे है। इसका मुख्य कारण आज की अर्थव्यवस्था है जहाँ आदमी मशीन बन कर रह गया है। किसी भी चीज को अपनाने से पहले उसे तर्क की कसौटी पर कसना जरूरी होता है। नए तकनिकी दबाव और अर्थतंत्र के बीच से संस्कृती नए रूप में उभरेगी जिसमें खोई हुई मानवता को पुनर्जीवित करने का प्रयास किया जाएगा।

विश्व की सभी संस्कृतियाँ

एक धरात पर आएँगी जहाँ प्यार, स्नेह और ममता का स्वाभाविक विकास होगा। इस रूपमे विश्व की सभी संस्कृतीयाँ एक जमीन पर खड़ी नजर आएँगी। पूरे विश्व में एक व्यापक संस्कृती का विकास हो सकेगा। इस विश्व को बचाने के लिएए आज इस व्यापक संस्कृती की बहुत जरूरत है। और हमारा ये मानता है की, भारतीय संस्कृती इस प्रयास में अग्रणी भूमिका निभाएगी।

समन्वय समर्पण नही है। इसमें कुछ लेना और देना होता है। इसमें नए रिश्ते कायम होते है। इसमें साम्राज्वाद नही होता। इसमें हडपनें की नशा नही होती।